Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (T.Y.B.A)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC 106

Paper Title: भारतीय काव्यशास्त्र

Unit: Unit 2

Module Name: ध्वनि सिद्धांत

Module No: 12

Name of the Presenter: Dr. Brijpal Singh Gahloth

Notes

ध्वनि सिद्धांत

ध्वनि सिद्धांत के प्रवर्तन का श्रेय आचार्य आनंद वर्धन (9 वीं सदी) को जाता है। उन्होंने अपने ग्रंथ 'ध्वन्यालोक' में इस सिद्धांत का व्यापक एवं व्यवस्थित रूप स्पष्ट किया। इसके बावजूद परवर्ती आचार्यों – धनंजय, कुंतक, भट्टनायक, महिम भट्ट, क्षेमेन्द्र आदि ने ध्वनि सिद्धांत का विरोध किया किन्तु अभिनव गुप्त (10वीं सदी) की 'ध्वन्यालोक लोचन' की व्याख्या तथा आचार्य मम्मट की 'काव्य-प्रकाश' में स्थापना के बाद ध्वनि सिद्धांत एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत के रूप में स्थापित हुआ।

इसकी विशेष बात है कि इसने काव्य से संबंध रखने वाले सभी सिद्धांतों को अपने में समेटने का प्रयास किया।

ध्वनि सिद्धांत के मूल में व्याकरण का स्फोटवाद है। इसे समझने का प्रयास करते हैं –

'कमल' शब्द में क, म, ल अलग-अलग उच्चारण से 'कमल' अर्थ का या किसी फूल का संकेत नहीं होता किन्तु क और म के उच्चारण से प्राप्त पूर्वानुभाव के साथ अंतिम वर्ण ल के उच्चारण अनुभव से जुड़ जाने से अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। इस प्रकार अंतिम वर्ण के साथ पूर्वोच्चरित वर्णों के संस्कार से अर्थ का प्रस्फुटन ही स्फोट है।

जिस प्रकार शब्द के अलग-अलग वर्णों के उच्चारण से अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं होती, उसी प्रकार अभिधा या लक्षणा द्वारा भी संपूर्ण या अभिप्रेत अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं होती। यह इष्ट अर्थ व्यंजना से ही प्राप्त होता है। व्यंजना से ध्वनित होने वाला यह इष्ट और चमत्कारिक अर्थ ही ध्वनि है। आनंदवर्धन ने इसे अनुरणत या अनुगूँज के रूप में माना है। इस प्रकार ध्वनित होने वाला व्यंग्यार्थ जहां पर प्रधान होता है, वहाँ ध्वनि मानी गई है। आनंदवर्धन ने ध्वनि की परिभाषा कुछ इस प्रकार से दी है –

यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनी क्रत स्वार्थौ।

व्यक्त: काव्य विशेष: स ध्वनिरिति सूरिभि: कविता

अर्थात जहां (वाच्य) अर्थ और (वाचक) शब्द अपने-अपने अस्तित्व को गौण बनाकर जिस (विशिष्ट) अर्थ को प्रकट करते हैं, वह (अर्थ) ध्वनि कहलाता है।

कहा जा सकता है कि ध्वनि काव्य का संबंध व्यंजना से है जो शब्द शक्ति का एक भेद है।

उदाहरण – गंगा में गाँव – गाँव की पवित्रता का संकेत यहाँ अभिधा या लक्षणा से न मिलकर व्यंजना से ही मिलता है अतः यहाँ ध्वनि काव्य है।

व्यंजना की प्रधानता के आधार पर काव्य के तीन भेद किए गए हैं –

1. ध्वनिकाव्य – जिस काव्य में वाच्यार्थ से अधिक चमत्कार व्यंग्यार्थ में होता है, वह ध्वनि काव्य है।
2. गुणीभूत व्यंग्य काव्य – काव्य में वाच्यार्थ की अपेकषा व्यंग्यार्थ कम चमत्कारक होता है तो उसे गुणीभूत व्यंग्य काव्य कहा गया।
3. चित्रकाव्य/अवर काव्य – जिस काव्य में व्यंग्यार्थ नहीं होता, वह चित्रकाव्य होता है। दूसरे शब्दों में अभिधात्मक काव्य को चित्रकाव्य कह सकते हैं।

पंडित जगन्नाथ का मत इससे भिन्न है। व्यंग्यार्थ के किसी भी प्रकार का होने पर उसे उत्तम काव्य मानते हैं।

आचार्य मम्मट ने ध्वनिकाव्य के 51 प्रमुख भेद माने जिनको अंततः 5 प्रमुख भेदों में समेट दिया गया, जो निम्नलिखित रूप में हैं –

1. अर्थांतर संक्रमित वाच्य ध्वनि – जिस काव्य में वाच्यार्थ अपना पूर्ण तिरोभाव न करके अन्य अर्थ में संक्रमण करता है। उदा॰ यह घर अच्छा है।

2. अत्यंत तिरस्कृत वाच्य ध्वनि – काव्य में जहां वाच्यार्थ का सर्वधा तिरस्कार या त्याग हो जाता है।
   उदा॰ – नीलोत्पल के बीच समाए मोती से आँसू के बूंद।
3. वस्तुध्वनि – जहां काव्य में व्यंग्यार्थ किसी भाव के रूप में प्रतीत होता है, वहाँ वस्तु ध्वनि होती है।
   उदा॰ वह टूटे तरु की टूटी लता सी दीन
   दलित भारत की ही विधवा है।
4. अलंकार ध्वनि – जहां व्यंग्यार्थ किसी अलंकार के रूप में प्रतीत होता है –
   रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
   पानी गए न उबरे मोती मानुस चून॥
5. रस ध्वनि – काव्य में जहां व्यंग्यार्थ विभाव, अनुभाव, स्थायी एवं संचारी भावों के संयोग पर आधारित हो वहाँ रस ध्वनि होती है। ध्वनि के अन्य भेदों की तुलना में इसमें वाच्यार्थ के बाद व्यंग्यार्थ की प्रतीति इतनी तीव्र होती है कि लक्षित नहीं होती, इसलिए इसे असंलक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि भी कहा जाता है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि ध्वनि सिद्धांत व्याकरण के स्फोटवाद पर आधारित है और इसके मूल में व्यंजना शब्द शक्ति ही है।